लेखकीय-वक्तव्य-रूपे राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर
राष्ट्रपति सम्मानित विद्वान्
संस्कृत प्रचार-प्रसार शोधपीठ

अथ सकृद् गुरुपूर्णिमा-पर्वणि मम शिष्य-प्रशिष्याः प्राचीनाः ।
मामर्चितुमुपागमन्, ममावासे विद्या वैभव-भवनेऽत्र ॥1॥

एक बार गुरुपूर्णिमा के पर्व पर मेरे प्राचीन शिष्य - प्रशिष्य मेरी अर्चना करने के लिए यहाँ मेरे आवासस्थल विद्या-वैभव-भवन पर आये ।

Once, on the occasion of Guru Purnima, my students and their students came to my residence, Vidya Vaibhav Bhawan, to express their respect.

तानहमवलोक्य चिराद्, अतीव मुदितोऽभवं मनस्येव मनसि ।
हृष्ट-पुष्टानपि तान्, म्लान-मुखान् दृष्ट्वा दुःखिनोऽनुमितवान् ॥2॥

उनको बहुत समय पश्चात् देख कर मैं मन ही मन में अत्यन्त प्रमुदित हुआ और हृष्ट-पुष्ट भी उनको मलिन-मुख देखकर उनको दुःखी होने का अनुमान किया ।

I was very happy to see them after such a long time, but although they looked healthy (and well fed), I saw unhappiness on their faces.

तेषामहं तु कुशलं, पृष्टवान् शङ्कितः शङ्कितः सन्नेव ।
अपि कुशलिनः स्थ यूयं ? लोकान् स्वविद्ययोपकुरुत च सन्ततम् ? ॥3॥

शङ्कित शङ्कित होते हुए ही मैंने उनसे उनका कुशल पूछा - 'तुम सब सकुशल तो हो और लोगों को अपनी विद्या से सतत उपकृत तो कर रहे हो ?'

Filled with doubt I have asked about their welfare – "Is everything in order and are you continuously spreading the knowledge?"

गार्हस्थ्य- सञ्चालने, तु न जायते किमपि काठिन्यं भोः ।
अपि युष्मत्सन्तानाः, सेवन्ते युष्मान् विनीताः ? ॥4॥

अरे ! गृहस्थी को सञ्चालित करने में तो कोई कठिनाई नहीं होती ? तुम्हारी विनीत सन्तानें तो तुम्हारी सेवा करती हैं न ?

Hey! There are no problems in taking care of own's home. Your respectful children are serving you, aren't they?

स्वमहं तु नार्चयं तैः, शारदाम्बामेवाभ्यार्चयन् पूज्याम्।
ततो मत् प्राप्ताशिषः, स्वापूर्णकुशलं त एवं मां न्यगदन् ॥5॥

मैंने उनसे अपने आपको तो अर्चित नहीं करवाया, पूज्य शारदाम्बा को ही अर्चित करवाया । तब मुझसे शुभाशिष प्राप्त किये हुए उन्होंने अपना अपूर्ण कुशल इस प्रकार मुझको बताया ।

I did not allow them to honour me, but (I made them worship) the respectful Mother Sharada (Saraswati). Getting permission from me, they expressed their ignorance in this way.

आं गुरुदेव ! सर्वविध- कुशलमस्माकं भवदीय - प्रसादेन ।
भवल्लब्ध - विद्यामपि, वितरामः सर्वत्र विशुद्ध - चेतसा ॥6॥

हाँ गुरुदेव ! आपके प्रसाद से हमारा सब प्रकार का कुशल है । आपसे प्राप्त विद्या को भी हम सर्वत्र विशुद्ध मन से वितीर्ण कर रहे हैं ।

Oh, Gurudev! By your grace, we are prospering in every way. With the knowledge we got from you we are always purifying/overcoming our impure mind.

गुरुदेव! वयं तु यथा कथं, श्री मदाशीर्भिर्जीवाम एव ।
स्वीय-राष्ट्रस्य परन्तु, शोच्य-दशां दर्श दर्शमतितपामः ॥7॥

हे गुरुदेव ! श्रीमान् आप की उन आशिषों से हम तो जिस किसी प्रकार जी ही रहे हैं, परन्तु अपने राष्ट्र की शोचनीय दशा को देख - देख कर अत्यन्त सन्तप्त हैं ।

Oh, Gurudev! We are those your disciples that are somehow living (good) but are suffering just by looking at the deplorable/bad state of our country.

(क्रमशः)